Webinar
दिनांक–04 सितम्बर 2021

प्रेषक,

निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र,
पशुपालन विभाग, उ0प्र0।

सेवा में,

समस्त मुख्य पशुचिकित्साधिकारी,
पशुपालन विभाग, उ0प्र0।

पत्रांक 61 /इ0पी0डी0/विविध/पर्यावरण/2021–22, दिनांक– 24 अगस्त, 2021

विषयः **गिद्ध प्रजाति के पक्षियों के संरक्षण हेतु जनजागरूता अभियान के सम्बन्ध में।**

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषयक अवगत कराना है कि गिद्ध प्रजाति के पक्षियों की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है। जिस कारण पर्यावरण में जैविक असंतुलन की स्थिति बनती जा रही है। गिद्ध प्रजाति के पक्षियों की संख्या निरन्तर कम होने का एक मुख्य कारण पशुओं की चिकित्सा में विभिन्न प्रकार की औषधियों यथा Diclofenac, Nimuslide, Ketoprofen आदि का उपयोग भी रहा है। उसको ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2006 में Diclofenac औषधि के उपयोग पर रोक लगा दी गई थी। साथ ही आपके संज्ञान में यह भी लाना उचित होगा कि गिद्ध प्रजाति के पक्षियों के संरक्षण एवं सम्वर्धन हेतु Bombay Natural History Society द्वारा प्रदेश के 18 जनपदों में वृहद्व अभियान संचालित किया जा रहा है।

अतएव गिद्ध प्रजाति के पक्षियों की पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन में महत्वपूण भूमिका को दृष्टिगत रखते हुये पशु चिकित्सा व्यवसाय में संलिप्त मानव संसाधन (पशुचिकित्साविद्/पैरावेट्स आदि) को उपरोक्त वर्णित औषधियों के उपयोग न करने के सम्बन्ध में जागरूक किये जाने की नितांत आवश्यकता प्रतीत हो रही है। उक्त प्रयोजन हेतु **दिनांक–04 सितम्बर 2021**, को एक वेबीनार का आयोजन Bombay Natural History Society के सहयोग से आयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया है। चूंकि माह सितम्बर का प्रथम शनिवार International Vulture Awareness Day के रूप में मनाया जाता है। वर्णित वेबीनार में स्वयं प्रतिभाग करें तथा अधीनस्थ पशु चिकित्साविदो को भी प्रतिभाग करने हेतु निर्देशित करना सुनिश्चित करें। उक्त Webinar link पृथक रूप से निर्धारित समय सहित सोशल मीडिया के माध्यम से आपको अवगत कराया जायेगा।

भवदीय

24/08/21

(डा0इन्द्रमनि)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

पत्रांक /इ0पी0डी0/विविध/पर्यावरण/2021–22 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि–1. समस्त मण्डलीय अपर निदेशक ग्रेड–2, पशुपालन विभाग को इस आशय से प्रेषित कि संदर्भित Webinar में प्रतिभाग करना सुनिश्चित् करें।

2. Bombay Natural History Society , को पत्र संख्या–VSZ-UP-125-LDB, दिनांक–24 अगस्त 2021, के सन्दर्भ में Webinar के आयोजन के सम्बन्ध में अग्रिम आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।
3. निदेशक, प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग, उ0प्र0, लखनऊ।
4. प्रमुख सचिव, पशुधन, उ0प्र0 शासन, सचिवालय, लखनऊ।

(डा0इन्द्रमनि)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

BNHS India — Conserving Nature Since 1883

Bombay Natural History Society - 1883

Ref.No: VSZ-UP-125-LDB
Date: 24/Aug/21

To

Dr. Arvind Kumar Singh Ji
Chief Executive Officer
Livestock Development Board
Uttar Pradesh Lucknow-226007

Subject: Proposed for online webinar regarding awareness on vulture conservation in Uttar Pradesh

Respected Sir

I am writing this letter to inform you about the conservation of three critical endangered species of vulture in Uttar Pradesh. 99 percent of the population of the three species which are endemic within UP viz. White-backed vulture, Long-billed and the Slender-billed vulture are now on the verge of extinction. According to international and national scientific analysis the reason for the decline is veterinary use of non steroidal anti-inflammatory drug (NSAID) diclofenac . This was found to be the most important cause for this catastrophic collapse of these three species.

The vultures get exposed to diclofenac when they feed on the carcass of an animal that was treated with the drug within 72 hours before its death. The drug is extremely toxic to vultures at a low concentration of 0.2 mg/kg, affecting their kidneys, and the vultures die due to visceral gout. Apart from diclofenac, drugs such as aceclofenac, ketoprofen, and nimesulide have also been identified as potentially toxic to vultures. Aceclofenac is particularly dangerous, as 75% of the drug gets converted to diclofenac within 2 hours of its administration in the animal.

The veterinary use of the diclofenac has been banned by the Government of India in 2006 vide the letter of Drug Controller General of India.To prevent the misuse of multidose vials the human formulations of the drug, the packaging size of injectable diclofenac was restricted to a maximum of 3 ml Government of India in July 2015.However, due to the lack of awareness in this regard, human formulations of diclofenac are still being used for cattle treatment, resulting in a continued risk to the remnant vulture population. Moreover, the unregulated use of drugs such as aceclofenac, ketoprofen, and nimesulide in cattle treatment also poses a threat to vultures.

In this regard, we would like to conduct awareness programmes among the field staff of your department in the districts Pilibhit, Bahraich, Balrampur, Lakhimpur, Gonda, Shravasti, Shahjahanpur, Sitapur, Hardoi, Bareilly, Barabanki, Faizabad, SantKabirNagar, Maharajganj, Kushinagar, Gorakhpur, and Basti. Keeping in mind the ongoing COVID situation, the programmes will be conducted by the online mode. Therefore, we would be grateful if you could kindly issue a letter to the concerned officers/ In-charge of the above districts regarding the proposed online awareness programmes. We would then get in touch with them to schedule and conduct these programmes.

I look forward to receiving a positive response from you in the near future and please do not hesitate to contact me for any further information.

Thanking you

JD(DC)
Dr. A.K. Verma,
JD-Poultry,
NADCP-Sub-nodal
24/8/2021
AD Godhan

Yours sincerely
Alka Dubey

UP- Vulture Conservation Team
Ms. Alka Dubey
Mr. Hemant Bajpai
Email: *alkabioinfo964@gmail.com,*
Mo: 07275097443,7651940943

Head office communications:
Dr. Vibhu Prakash Mathur
Bombay Natural History Society
Vulture Conservation Programme
Hornbill House,Dr.Salim Ali Chowk
Shaheed Bhagat Singh Road
Mumbai-400 -001
Email: vibhuprakshmathur@gmail.com
Mobile: 09416044924 / 08295844092

"First Saturday of Sept is International Vulture Awareness Day"

Webinar
दिनांक–04 सितम्बर 2021

प्रेषक,

निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र,
पशुपालन विभाग, उ0प्र0।

सेवा में,

समस्त मुख्य पशुचिकित्साधिकारी,
पशुपालन विभाग, उ0प्र0।

पत्रांक /इ0पी0डी0/विविध/पर्यावरण/2021–22, दिनांक–24 अगस्त, 2021

विषयः **गिद्ध प्रजाति के पक्षियों के संरक्षण हेतु जनजागरूता अभियान के सम्बन्ध में।**

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषयक अवगत कराना है कि गिद्ध प्रजाति के पक्षियों की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है। जिस कारण पर्यावरण में जैविक असंतुलन की स्थिति बनती जा रही है। गिद्ध प्रजाति के पक्षियों की संख्या निरन्तर कम होने का एक मुख्य कारण पशुओं की चिकित्सा में विभिन्न प्रकार की औषधियों यथा Diclofenac, Nimuslide, Ketoprofen आदि का उपयोग भी रहा है। उसको ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2006 में Diclofenac औषधि के उपयोग पर रोक लगा दी गई थी। साथ ही आपके संज्ञान में यह भी लाना उचित होगा कि गिद्ध प्रजाति के पक्षियों के संरक्षण एवं सम्वर्धन हेतु Bombay Natural History Society द्वारा प्रदेश के 18 जनपदों में वृहद्व अभियान संचालित किया जा रहा है।

अतएव गिद्ध प्रजाति के पक्षियों की पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन में महत्वपूण भूमिका को दृष्टिगत रखते हुये पशु चिकित्सा व्यवसाय में संलिप्त मानव संसाधन (पशुचिकित्साविद्/पैरावेट्स आदि) को उपरोक्त वर्णित औषधियों के उपयोग न करने के सम्बन्ध में जागरूक किये जाने की नितांत आवश्यकता प्रतीत हो रही है। उक्त प्रयोजन हेतु **दिनांक–04 सितम्बर 2021**, को एक वेबीनार का आयोजन Bombay Natural History Society के सहयोग से आयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया है। चूंकि माह सितम्बर का प्रथम शनिवार International Vulture Awareness Day के रूप में मनाया जाता है। वर्णित वेबीनार में स्वयं प्रतिभाग करे तथा अधीनस्थ पशु चिकित्साविद्ो को भी प्रतिभाग करने हेतु निर्देशित करना सुनिश्चित करें। उक्त Webinar link पृथक रूप से निर्धारित समय सहित सोशल मीडिया के माध्यम से आपको अवगत कराया जायेगा।

भवदीय

(डा0इन्द्रमनि)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।

पत्रांक 61 /इ0पी0डी0/विविध/पर्यावरण/2021–22 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि–1. समस्त मण्डलीय अपर निदेशक ग्रेड–2, पशुपालन विभाग को इस आशय से प्रेषित कि संदर्भित Webinar में प्रतिभाग करना सुनिश्चित् करें।

2. Bombay Natural History Society , को पत्र संख्या–VSZ-UP-125-LDB, दिनांक–24 अगस्त 2021, के सन्दर्भ में Webinar के आयोजन के सम्बन्ध में अग्रिम आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।
3. निदेशक, प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग, उ0प्र0, लखनऊ।
4. प्रमुख सचिव, पशुधन, उ0प्र0 शासन, सचिवालय, लखनऊ।

24/08/21

(डा0इन्द्रमनि)
निदेशक,
रोग नियन्त्रण एवं प्रक्षेत्र।